This question paper contains 6 printed pages.

5381

आपका अनुक्रमांक..............................

B.A. (Prog.) / II **A**

(T)

HINDI DISCIPLINE— Paper II

हिन्दी अनुशासन— प्रश्नपत्र II

(हिन्दी गद्य विधाएँ, उपन्यास और गद्य साहित्य का इतिहास)

(प्रवेश वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये / NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक :* 75

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिये गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी:— *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी A) के विद्यार्थियों के लिये अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में उनके परिणाम के संकलन के लिये नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।*

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परंतु है वह उस विशाल सामंत-सभ्यता की परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिजनों पर पली थी, उसके रक्त के संचार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से समृद्ध

P. T. O.

हुई थी। वे सामंत उखड़ गए, समाज ढह गया और मदनोत्सव की धूम-धाम भी मिट गई। संतान-कामिनियों को गंधर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा— पीरों ने, भूत-भैरवों ने, काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्ज़त घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया।

अथवा

'दूसरे की दुर्बलता के प्रति मनुष्य का ऐसा स्वाभाविक आकर्षण है कि वह सच्चरित्र की त्रुटियों के लिए दुश्चरित्र को भी प्रमाण मान लेता है। चोर ईमानदारी का उपयोग नहीं जानता, झूठ सत्य के प्रयोग से अनभिज्ञ रहता है। किसी गुण से अनभिज्ञ या उसके संबंध में अनास्थावान मनुष्य यदि उस विशेषता से युक्त व्यक्ति का विश्वास न करे, तो स्वाभाविक ही है, पर उसकी भ्रांत धारणा भी प्रायः समाज में प्रमाण मान ली जाती है, क्योंकि मनुष्य किसी को दोषरहित नहीं स्वीकार करना चाहता और दोषों के अथक अन्वेषक दोषयुक्तों की श्रेणी में ही मिलते हैं।'

(ख) 'यह बेचैनी एक हद तक उस बेचैनी से मिलती है, जो मुझे बहुत पहले मान और काफ्का की कथाओं को पढ़ने से होती थी। आज सोचता हूँ तो आश्चर्य होता है कि मैंने इस 'बेचैनी' को यूरोप आने से पूर्व कभी ठीक से समझने का प्रयत्न नहीं किया। यह आकस्मिक नहीं है कि दोनों लेखक मध्य-यूरोप के दो अलग-अलग भागों से संबंधित थे— जर्मनी और चेकोस्लोवाकिया। यहाँ से गुजरते हुए पहली बार महसूस होता है कि यूरोप का यह खंड जिंदगी के उन अज्ञात गोपनीय रहस्यों से गुंफित है जिन्हें आज तक फ्रांस, इंग्लैंड या स्पेन ने स्पर्श नहीं किया है।

अथवा

सभी देशों के इतिहासों से सिद्ध है कि निकम्मे पादरियों, मौलवियों, पंडितों और साधुओं के दान के अन्न पर पला हुआ ईश्वर-चिंतन अंत में पाप, आलस्य, भ्रष्टाचार में परिवर्तित हो जाता है। जिन देशों में हाथ और मुँह पर मजदूरी की धूल नहीं पड़ने पाती वे कर्म और कला-कौशल में कभी उन्नति नहीं कर सकते। पद्मासन निकम्मे सिद्ध हो चुके हैं। वही आसन ईश्वर प्राप्त करा सकते हैं जिनसे जोतने, बोने, काटने और मजदूरी का काम लिया जाता है। लकड़ी, ईंट और पत्थर को मूर्तिमान करने वाले लुहार, बढ़ई, मेगार तथा किसान आदि वैसे ही पुरुष हैं जैसे कि कवि, महात्मा और योगी आदि। 8+8

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(*i*) 'तूफानों के बीच : अदम्य जीवन'— शीर्षक से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) सरकारी-तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को लेखक ने किस प्रकार चित्रित किया है? 'भोलाराम का जीव' के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*iii*) 'बिबिया' रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(*iv*) बेला को जब महत्त्व और सम्मान दिया जाने लगता है तब भी उसे प्रेम का अभाव क्यों महसूस होता है? 'सूखी डाली' के आधार पर उत्तर दीजिए।

(*v*) 'वापसी' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार में पारिवारिक संबंधों में आए बदलाव पर विचार कीजिए।

P. T. O.

(*vi*) बेनीपुरी जी ने किन तीन विराट छवियों से बुधिया का जीवन-चित्र प्रस्तुत किया है? वर्णन कीजिए। $4\times4=16$

(*ख*) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए:

(*i*) गंगी ठाकुर के कुएं से पानी क्यों लाना चाहती थी?

(*ii*) शील का क्या अभिप्राय है?

(*iii*) लेखक ने शिद्धिरगंज की तुलना स्तालिनग्राड से क्यों की?

(*iv*) राजघरानों में कौन अपने चरणों के आघात से 'मदनोत्सव' के दिन अशोक वृक्ष को पुष्पित किया करता था? कभी-कभी उसके स्थान पर अन्य किस की नियुक्ति की जाती थी?

(*v*) गाड़ी खुलने के बाद शकलदीप बाबू प्लेटफार्म पर उसके पीछे क्यों भागे? $1\times3=3$

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(*i*) 'इस समय जो उसके साथ थोड़ी सी सहानुभूति दिखा देता, उसी को वह अपना शुभचिन्तक समझने लगती। उसकी सारी मलिनता और खिन्नता मानो भस्म हो गई थी, वह सभी को अपना समझती थी। उसे किसी पर संदेह न था, किसी से शंका न थी। कदाचित् उसके समाने कोई चोर भी उसकी संपत्ति का अपहरण करता तो वह शोर न मचाती।' (*गबन*)

(*ii*) यहाँ आकर उसे अनुभव होता था कि मैं भी संसार में हूँ— उस संसार में जहाँ जीवन है, लालसा है, प्रेम है, विनोद है।

उसका अपना जीवन तो व्रत की वेदी पर अर्पित हो गया था। वह तन-मन से उस व्रत का पालन करती थी पर शिवलिंग के ऊपर रखे हुए घर में क्या वह प्रवाह है, तरंग है, नाद है, जो सरिता में है? (*गबन*)

(*iii*) 'सवेरे मरे बच्चों की हड्डियों से चिपट-चिपट कर ऐसा रोती, ऐसा रोती कि चेत ही नहीं रहता। नौकर-चाकर दौड़ पड़ते। कोई गुलाब-जल छिड़कता, कोई केवड़ा-जल। राजा खुद फूलों के पंखे से हौले-हौले बयार करते, बेटे का ग़म भूल, रानी की चिन्ता में परेशान हो जाते। रानी होश में आती तो चीखती, 'मेरे बच्चे को लाओ .... नहीं मैं प्राण दे दूँगी।' इतना बड़ा राज्य, इतना बड़ा राजा फिर भी कोई पता ही नहीं .....।'

(*आपका बंटी*)

(*iv*) 'खाने की मेज पर बैठते समय नज़र नीची किये रहने पर भी अ ब स त्रिकोण उभर आता है और उसकी भुजाएँ एक सिरे से दूसरे तक दौड़ती रहती हैं। सभी की आँखें उसकी प्लेट में चिपकी हुई उसे घूरती रहती हैं। जब तक डॉक्टर साहब घर में रहते हैं, ममी कहीं भी रहें, कुछ भी करें, उनकी आँखें बंटी के आगे-पीछे ही घूमती रहती हैं, उसे ही देखती रहती हैं। वह पढ़ता है तब भी, वह खाता है तब भी, सोता है तब भी .... सतर्क, चौकन्नी और घूरती हुई आँखें। पहले बंटी उन आँखों की एक तीखी सी चुभन महसूस करता था, अब केवल आँखों का होना-भर महसूस करता है। (*आपका बंटी*) 8

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(*i*) *आपका बंटी* की उपन्यास कला का मूल्यांकन कीजिए।

P. T. O.

(*ii*) *आपका बंटी* में चित्रित बाल-मनोविज्ञान का विवेचन कीजिए।

(*iii*) रमानाथ के चारित्रिक विकास में स्त्री-पात्रों के योगदान को रेखांकित कीजिए।

(*iv*) *गबन* की भाषा-शैली की समीक्षा कीजिए। 12

5. प्रसाद-युगीन नाटकों का परिचय दीजिए।

अथवा

हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य के विकास पर एक लेख लिखिए। 10

6. हिन्दी कहानी **अथवा** आलोचना के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए। 10

*